साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 43, अगस्त(द्वितीय) , 2018

पुस्तक समीक्षा-

बाल मन की कविताएँ: मि फौजी बणूँल

डा. बंदना चंद

'मि फौजी बणूँल' युवा रचनाकार पवनेश ठकुराठी 'पवन' द्वारा रचित कुमाउनी बाल कविता संग्रह है। इस संग्रह में कुल 24 बाल कविताएं हैं। ये कविताएं क्रमशः बिराउ कैं बुखार, गुणि ददा!, बोलि, हजारीक फूल, बर्खा लागी, चिट्ठि ऐरै, घुघुति चड़ी, तुरै भौजि, चुटकियोंकि बरयात, बानर ककाक फौन, धौनी काकू, गज्यागान, पिपरी बाज, लाल बुरूंश, ताल, माकड़, गुल्ली डंड-जिंदाबाद, नैनो कार, मि फौजी बणूँल, इकन्नि काकि, प्यौलि पिडलि, नान मुस, लंब काकड़ और ऐगो ढडू हैं।

ये सभी कविताएं बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। संग्रह की पहली ही कविता इतनी रूचिकर बन पड़ी है कि बच्चे गुनगुनाने के लिए मजबूर हो उठते हैं-

एक द्वी तीन चार,
बिराउ कैं ऐगो भौत बुखार।

पांच छै सात आठ,
मुसाक हैरईं भौतै ठाठ।

'गुल्ली डंडा' खेल पर आधारित इस संग्रह की 'गुल्ली डंड-जिंदाबाद' कविता भी मजेदार है-

लगौ दंड-जिंदाबाद,
हैरौ ठंड-जिंदाबाद।
तूँ ले खेल-मीं ले खेलूँ,
गुल्ली डंड-जिंदाबाद।

संग्रह की 'लाल बुरूंश' कविता बुरांश फूल के सौंदर्य और उपयोगिता दोनों से बच्चों को रूबरू कराती है-

डाण में खिलूँ- लाल बुरूँश,
हावल हिलूँ- लाल बुरूँश।
किसम नमानकि दवै बणैं,
जूस दिलूँ-लाल बुरूँश।

इस संग्रह की शीर्षक कविता बच्चों में देश प्रेम के उदात्त भाव भरती है और उन्हें फौज का सिपाही बनने के लिए प्रेरित करती है-

दुश्मनक छक्क छुड़ँूल,
बौडर में लड़ै लड़ूँल।
सुभावक मनमौजी बणूँल,
मि फौजी बणूँल।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मि फौजी बणूँल एक पठनीय एवं उपयोगी बाल कविता संग्रह है, जो बाल मन को ध्यान में रखकर लिखा गया है। कविताओं

के साथ संलग्न चित्र भी आकर्षक बन पड़े हैं। अगर बच्चे इन कविताओं को गाएं, गुनगुनाएं तो लेखक का प्रयास सफल माना जायेगा।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें